Research Review
RESEARCH REVIEW
The Academic Research Issue
Open Access, Peer-Reviewed & Refereed Journal
An International Multidisciplinary Journal
ISSN: 2321-4708
Vol.1, Issue: 153, May 2025
Paper ID: RRJ598368
www.researchreviewonline.com
Publishing URL: https://www.researchreviewonline.com/issues/volume-1-issue-153-may-2025

संस्कृत शास्त्रों में योग का सांस्कृतिक अनुबंध

By
विजयकुमार बलवंतराय व्यास
Ph.D. Scholar
Maharaja Krishnakumarsinhji Bhavnagar University, Bhavnagar

शोध सार

भारतीय संस्कृति की धार्मिक एवं आध्यात्मिक परम्परा में योग का बहुत महत्व है l भारतीय संस्कृति की 'योग' एक महत्वपूर्ण दार्शनिक विचारधारा है। इसका प्रमुख विषय आत्मसाक्षात्कार है। इसकी चर्चा वेद, उपनिषद्, स्मृति, पुराण आदि सभी ग्रन्थों में प्राप्त होती है। अन्य दर्शनों की अपेक्षा इसकी एक अपनी विशेषता यह है कि यह केवल सैद्धान्तिक ही नहीं बल्कि व्यावहारिक भी है। स्वस्थ शरीर तथा सबल आत्मा दोनों ही इसके प्रतिपाद्य विषय हैं। इस दर्शन के प्रवर्तक महर्षि पतंजलि है। इनके दर्शन को पातंजल दर्शन कहते है। योगदर्शन का पहला ग्रंथ 'योगसूत्र' या 'पातंजल योगसूत्र' है। यह ग्रंथ योग-दर्शन का सबसे प्रामाणिक ग्रंथ माना जाता है। मूलतः योग तत्त्वज्ञान का अभ्यास है। कैवल्य अथवा मोक्ष प्राप्त करने के लिए जिस मार्ग का अनुसरण और जिन साधनाओं को करना आवश्यक है उसका विस्तृत विवरण योग-दर्शन में ही मिलता है। योग-दर्शन का 'सांख्य' के साथ बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध है। सांख्य में यदि सैद्धान्तिक पक्ष है तो उसका व्यावहारिक पक्ष योग में मिलता है। एक तरह से इन दोनों को एक दूसरे का पूरक कहा जा सकता है। उपनिषद में सबसे पहली बार योग का उल्लेख आया है। योग की क्रियाओं से चित्त की वृत्तियों का निरोध होता है, मन स्थिर होता है, हृदय पवित्र होता है, आत्मा भौतिक जीवन से ऊँची उठ जाती है और ब्रह्म को समझने में सुगमता होती है। भारतीय संस्कृति के धार्मिक एवं आध्यात्मिक गूढ तथ्यों का ज्ञान तभी सम्भव हो सकता है जब मनुष्य का चित्त एवं हृदय शुद्ध एवं शान्त हो। आत्मशुद्धि एवं आत्मज्ञान के लिए योग ही सर्वोत्तम साधन है। योग-दर्शन में यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि आठ साधनों मान्यता दी गयी है। इन्हें जीवन में उतारने से शरीर, मन और इन्द्रियां संयम सीखाती हैं l शारीरिक और आत्मिक तेज और बल से इसमें वृद्धि होती है। योगी अपनी साधना के बल पर त्रिकालदर्शी हो सकता है। योग साधना का वास्तविक लाभ मोक्ष की प्राप्ति है। वर्तमान में, मानसिक, शारीरिक स्वास्थ्य के लिए योग की उपयोगिता दिन-प्रति-दिन दुनिया के सम्मुख रखी जा रही है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर योग दिवस मनाये जा रहे हैं।

प्रस्तावना

भारतीय दर्शन का आरंभ वेदों से होता है l वेद भारतवर्ष की और कदाचित् संसार की प्राचीनतम साहित्यिक संपत्ति है । वेद संख्या में चार है- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद ऋग्वेद इन सब में सबसे प्राचीन है । ऋग्वेद स्तुतिप्रधान है, यजुर्वेद में यज्ञों की प्रधानता है, सामवेद संगीत प्रधान है और अथर्ववेद में कृषि, जादू-टोना, मंत्र तंत्र आदि का बाहुल्य है। वैदिक परंपरा का विकास चार चरणों में हुआ है, जिन्हें वेद के चार भाग कहे जाते हैं। प्रथम चरण मंत्रभाग या संहिताभाग कहलाता है, द्वितीय में ब्राह्मणग्रंथ तथा तृतीय में आरण्यक और चतुर्थ में उपनिषदों की रचना की गयी है। ज्ञान प्रधान होने के कारण उपनिषदों को वेदांत भी कहा जाता है।

दर्शन का स्वरूप

दर्शन शब्द दृश धातु से 'ल्यूट' प्रत्यय करने से निष्पन्न होता है । दर्शन शब्द का अर्थ है देखना , नजर डालना, अवलोकन करना, निहारना, दृष्टिगोचर करना, निरीक्षण करना, जिसके द्वारा किसी वस्तु को देखा या समझा जाय। 1 भारतीय दर्शन की दो शाखाएँ है- आस्तिक तथा नास्तिक जो दर्शन वेदों को प्रमाण रूप में स्वीकार करते हैं, उन्हें आस्तिक

दर्शन कहते हैं जिनमें सांख्य-योग, न्याय वैशेषिक, पूर्वमीमांसा एवं उत्तरमीमांसा की गणना होती है। जो दर्शन वेदों का प्रमाण रूप में स्वीकार नहीं करते उन्हीं नास्तिक दर्शन कहते है जिनमें चार्वाक, बौद्ध, जैन प्रमुख रूप से है। नास्तिक को वेदविरोधी दर्शन भी कहा जाता है- नास्तिको वेदनिन्दकः। सांख्य और योग एक- दूसरे के पूरक दर्शन हैं। सांख्य इश्वर की सत्ता नहीं मानता, जबकि योग ईश्वर की सत्ता का स्वीकार करता है। इसलिए सांख्य को ' निरीश्वर सांख्य' और योग को 'सेश्वर सांख्य' भी कहते है। पतंजलि का योगसूत्र योग का सबसे महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है।

योग शब्द पुल्लिंग है। युज् धातु में भवादी गण से धञ्, कुल्वम् प्रत्यय लगता है और उसका अर्थ जोड़ना, मिलाना, मिलाप, संगम, मिश्रण आदि होता है। आचार्य हेमचन्द्र के व्याकरण के अनुसार भी युज् धातु दो अर्थों में प्रयुक्त है। जिनमें एक का अर्थ जोड़ना या संयोजित करना है तथा दूसरे का समाधि। योग शब्द का सम्बन्ध 'युज' शब्द से भी है जिसका अर्थ जोड़ना होता है और वैदिक साहित्य में अनेक स्थलों पर प्रयुक्त भी हुआ है। इस प्रकार व्याकरण के अनुसार 'योग' शब्द साधन और साध्य दोनों अर्थों में प्रयुक्त हुआ है। अतः योग शब्द के अर्थ- संयोजन, मिलन, संयमन, कार्यप्रनणता, संयोग और समाधि होता हैं। महर्षि व्यासने योग का समाधि का वाचक माना है।

योग की प्रमुख तीन विधाएँ हैं ज्ञान योग, भक्ति योग एवं कर्मयोग। इनमें से ज्ञानयोग का अन्वाख्यान विशेष रूप से उपनिषद् – ब्रह्मसूत्र – वेदान्त दर्शन में हुआ है। भक्तियोग का निरूपण विशेषतया इतिहास पुराणों में किया गया है। एवं कर्मयोग का प्रतिपादन योगदर्शन में किया गया है। यथार्थतः ज्ञानयोग, भक्तियोग तथा कर्मयोग ये तीनों विधाएँ अन्योन्यानुपूरक अन्योन्याश्रित तथा – अन्योन्यानुबन्धी होने के कारण इनके सम्पूर्ण सामञ्जस्य से ही सम्पूर्ण योग की उपलब्धि सम्भव हो पाती है। कर्मयोग के प्रमुख चार भेद प्राप्त होते हैं- मन्त्रजपयोग, लययोग, हठयोग तथा राजयोग।

संस्कृत शास्त्रों में योग का अनुबंध

वेदों में योग

वेदों में योग के विषय में अनेक स्थलों पर विवेचन किया गया है जो कि कतिपय उद्धरणों से व्यक्त होता है- विद्वानों का यज्ञकर्म बिना योग के सिद्ध नहीं होता। ऋग्वेद में प्रत्येक शब्द प्रतीकात्मक रूप में व्यवस्त हुआ है। प्रायः इन्द्र, अग्नि, वरूण, सोम आदि का वर्णन प्राप्त होता है, परन्तु इस वर्णन के पीछे आध्यात्मिक अनुभव का मूल है, जो कि उस सन्दर्भ में लक्षित अर्थ को लगाने पर ही समझ में आता है। इस प्रकार वैदिककाल से ही योगपरम्परा आरम्भ हो गयी थी। जिसे 'योग माया' नाम से व्यवहृत किया गया है। योगसिद्धि के लिये भगवान को अपनी ओर आकृष्ट करने के लिए ईश्वर प्रार्थना के क्रम में कहा गया है कि हम साधक लोग हर योग हर कष्टमय स्थिति में परम ऐश्वर्यवान इन्द्र का आह्वान करते हैं।

यजुर्वेद के प्रतिपादक विषय में राज्यशासन, शासनविभाग, राष्ट्रविभाग, राष्ट्रविजय, राज्याभिषेक तथा युद्धादि का पर्याप्त वर्णन मिलता है। यत्र - तत्र योग परम्परा की भी सूचना मिलती है। यजुर्वेद में योगाभ्यास का वर्णन मिलता है कि उस महान अनन्त विद्या के भण्डार विविध कर्मों को पूर्ण करने वाले परमेश्वर के ध्यान में मेघावी अपने आत्मा की उसमें आहुति करने वाले पुरूष उसमें अपने मन को योग द्वारा युक्त करते हैं और अपनी बुद्धियों और क्रियाओं को उधर ही लगा देते हैं वे उसका विशेष रूप से वर्णन करते हैं, वह उत्तम कर्मों और विद्वानों का ज्ञाता एक ही है। उन सभी के उत्पादक सर्वद्रष्टा परमेश्वर की बड़ी भारी महिमा है। वह सत्यवाणी का उपदेष्टा है। योग द्वारा ज्ञानप्राप्ति के सन्दर्भ में यजुर्वेद में उल्लेख मिलता है कि हम सभी लोग योग द्वारा समाहित स्थिर चित्त से सर्वोत्पादक परमदेव परमेश्वर के उत्पादित जगत में अपनी शक्ति से उत्पन्न सुख - लाभ के लिए उस परम ज्ञान को प्राप्त करें।

यजुर्वेद में योगाभ्यास का वर्णन मिलता है कि बुद्धिमान पुरुष जैसे हलो को जोतते हैं और बुद्धिमान पुरुष विद्वानों का सुख हो ऐसी बुद्धि से जुओं के जोड़ी विविध देशों में ले जाते हैं, वैसे ही विद्वान योगी जन नाड़ियों में

RESEARCH REVIEW
The Academic Research Issue
Open Access, Peer-Reviewed & Refereed Journal
An International Multidisciplinary Journal
ISSN: 2321-4708
Vol.1, Issue: 153, May 2025
Paper ID: RRJ598368
www.researchreviewonline.com
Publishing URL: https://www.researchreviewonline.com/issues/volume-1-issue-153-may-2025

योगाभ्यास करते हैं। इन्द्रिय वृत्तियों में सुषुम्ना द्वारा या सुखप्रद धारणा वृत्ति से प्राण अपान आदि नाना जोड़ों द्वन्दो का अलग-अलग विविध प्रकार से अभ्यास करते हैं।

उपनिषद में योग

उपनिषद में अनेक स्थानों पर योग के प्रमाण मिलते है । पंच महाभूतों का उत्थान होने पर और पंचयोग सम्बन्धी गुणों के सिद्ध हो जाने पर योग से तेजस्वी हुए देह को पा जाने वाला योगी रोग, जरा, मृत्यु से मुक्त हो जाता है। देह का हल्का होना, आरोग्य भोगों से निवृत्ति, वर्ण की उज्जवलता, स्वर सौष्ठव, श्रेष्ठ, गन्ध, मल मूत्र की कमी यह सब योग की प्रथम सिद्धि बतलायी गयी है। जैसे कोई चमकता हुआ रत्न मिट्टी लिपटने से मैला हो जाता है और स्वच्छ किये जाने पर पुनः चमकने लगता है वैसे ही योगी आत्मतत्व के द्वारा दीपक के समान प्रकाशमय ब्रह्म तत्व के दर्शन करता है तब वह अज, निश्चल, सर्वतत्व युक्त पवित्र परमेश्वर को जानकर सभी बन्धनों से मुक्त हो जाता है । उपनिषदों में प्रयुक्त योग शब्द आध्यात्मिकता की तरफ संकेत करता है क्योंकि योग, ध्यान, तप आदि शब्द समाधि के ही अर्थ में प्रयुक्त हुए हैं। आध्यात्मिकता का उल्लेख है कि जो ब्रह्म सनातन दुर्लभ, गूढ़, सर्वव्याप्त हृदय रूप गुफा में स्थित रहता है उसे बुद्धिमान पुरुष या योगी आध्यात्म योग द्वारा समझकर हर्ष शोकादि से मुक्त हो जाता है। षडंग योग विभिन्न रूपों का वर्णन करते हुए योग के छः अंगों में प्राणायाम, ध्यान, तर्क, समाधि के साथ प्रत्याहार की भी गणना की गयी है।

उपरोक्त विवेचन से द्योतित होता है कि वेदों में मन्त्रों के द्वारा प्राकृतिक वस्तुओं तथा विभिन्न आधारों के माध्यम से स्तुति कर योग के स्वरूप को वर्णित किया गया है। योग का परम उद्देश्य परमात्मा के साथ आत्मा का ऐक्य स्थापित करना है। वेदों में अंकुरित योग के बीज का विकास एवं पल्लवन उपनिषद् काल में पर्याप्त हुआ है। प्रमुख उपनिषद् 108 हैं किन्तु योग से सम्बन्धित उपनिषदों की संख्या 20 है। 12 उपनिषदों में योग शब्द का प्रयोग दर्शन विशेष तथा क्रियात्मक योग दोनों अर्थों में हुआ है, जिसे कठ, मुण्डक, छान्दोग्योपनिषद् आदि में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। श्वोताश्वतरोपनिषद् के द्वितीय अध्याय में क्रियात्मक योग का स्पष्ट एवं विस्तार से वर्णन मिलता है। इसमें षडंग योग का वर्णन करते हुए कहा गया है कि शरीर को त्रिरुन्नत अर्थात् छाती, गर्दन और सिर उन्नत व सम करके मनसहित इन्द्रियों को हृदय में समावेश करके ब्रह्मरूप नौका से विद्वान् लोग सभी भयानक प्रवाहों को तर जायें। इस शरीर में प्राणों को अच्छी तरह निरोध करके युक्त चेष्टा हों और प्राण के क्षीण होने पर नासिका द्वार से श्वास छोड़े और इन दुष्ट घोड़ों की लगाम रूपी मन को विद्वान् अप्रमत्त होकर धारण करें तथा ध्यान रूप मंथन से अत्यन्त गूढ आत्मा का दर्शन करें। विभिन्न उपनिषदों में ब्रह्मपदप्राप्ति के लिए श्रद्धा, तप, ब्रह्मचर्य, सत्य, दान, दया आदि की आवश्यकता पर भी बल दिया गया है। लेकिन इस पद की प्राप्ति के लिए ज्ञान एवं योग अर्थात् आचार और विचार दोनों की आवश्यकता होती है। उपनिषदों में योग के प्रकारों में भेद पाया जाता है। किसी में योग के दो प्रकार (कर्मयोग और ज्ञानयोग) तो किसी में चार प्रकार (मन्त्रयोग राजयोग,लययोग, हठयोग) बताये गये हैं। इसके अतिरिक्त उपनिषदों में प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, तर्क और समाधि आदि के वर्णन तो मिलते हैं, लेकिन आसन आदि का विस्तृत वर्णन उपलब्ध नहीं होता है।

श्रीमद्भगवद्गीता में योग

भगवद्गीता विश्वसाहित्य की आकाशगंगा का एक अत्यन्त उज्ज्वल, मधुर एवं आकर्षक प्रकाश पुंज है, जिसकी स्निग्ध चन्द्रिका से हताश एवं निराश मानवता को अनिर्वचनीय शान्ति एवं शक्ति मिलती है। भगवद्गीता भारतीय मनीषा का सर्वाधिक मधुर एवं मूल्यवान रत्न है।भगवद्गीता के प्रत्येक अध्याय को योग की संज्ञा दी गयी है। इस प्रकार अठारह अध्यायों को क्रमशः निम्न योगों से अभिहित किया गया है-

(1) अर्जुनविषादयोग (2) सांख्ययोग (3) कर्मयोग (4) ब्रह्मार्पण योग ज्ञानकर्मसंन्यासयोग (5) कर्मसंन्यास योग (6) आत्मसंयमयोग (7) ज्ञानविज्ञान योग (8) अक्षरब्रह्मयोग (9) राजविद्याराजगुह्ययोग (10) विभूतियोग (11)

Research Review
RESEARCH REVIEW
The Academic Research Issue
Open Access, Peer-Reviewed & Refereed Journal
An International Multidisciplinary Journal
ISSN: 2321-4708
Vol.1, Issue: 153, May 2025
Paper ID: RRJ598368
www.researchreviewonline.com
Publishing URL: https://www.researchreviewonline.com/issues/volume-1-issue-153-may-2025

विश्वरूपदर्शन योग (12) भक्तियोग (13) क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभागयोग (14) गुणत्रयविभागयोग (15) पुरुषोत्तमयोग (16) देवासुरसंपदविभागयोग (17) श्रद्धात्रयविभागयोग (18) मोक्षसंन्यासयोग |

यदि उपरोक्त योगों का विश्लेषण किया जाय तो प्रत्येक छः अध्यायों में एक नवीन उपदेश है। पहले छः अध्यायों में पाँच प्रकार की साधनाप्रणाली का वर्णन है। जिन्हें कर्मयोग के अन्तर्गत रखा गया है। अगले छः अध्यायों में भगवान् ने उपदेश का मूल अथवा गीता का हृदय खोलकर रख दिया है तथा अपने शिष्य को दिव्यदृष्टि प्रदान की है। इसमें भक्तियोग है। अन्त के छः अध्यायों में भगवान श्रीकृष्ण ने कुछ विशिष्ट एवं दुरुह सिद्धान्तों की मीमांसा की है, जिन्हें समझाना योग को पूर्णतः व्यवहार में लाने के लिए अत्यन्त आवश्यक है। यही ज्ञानयोग है। इस प्रकार प्रथम छ: अध्यायों में कर्मयोग, द्वितीय छ: अध्यायों में भक्तियोग एवं अन्त के छः अध्यायों में ज्ञानयोग का विवेचन किया गया है। उपरोक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि गीता में योग शब्द कई अर्थों में प्रयुक्त हुआ है। कभी वह कर्म के साथ जुड़कर कर्मयोग, भक्ति के साथ जुड़कर भक्तियोग तथा ज्ञान के साथ जुड़कर ज्ञानयोग के नाम से जाना जाता है। शंकराचार्य ने अपने भाष्य में लिखा है कि गीता ज्ञानयोग का प्रतिपादन करती है। तिलक के अनुसार गीता कर्मयोग का प्रतिपादन करती है। इसी प्रकार रामानुजाचार्य, निम्बार्काचार्य और श्री बल्लभाचार्य के अनुसार गीता का मुख्य विषय भक्तियोग है। इन सबको एक जगह संयोजित करते हुए डॉ॰ राधाकृष्णन ने कहा हैं कि गीता में प्रतिपादित ज्ञानयोग, भक्तियोग और कर्मयोग तीनों एक दूसरे के पूरक हैं। परन्तु समग्रता से अवलोकन करने पर गीता में योग शब्द दो अर्थों में प्रयुक्त होता हुआ दिखायी देता है। पहला "योगः कर्मसु कौशलम्" अर्थात् कर्म में कुशलता ही योग है। दूसरा "समत्वं योग उच्यते' अर्थात् समत्व ही योग है। इन दोनों में पहला व्यवहारिक योग है तो दूसरा आध्यात्मिक। पहला साधन योग है तो दूसरा साध्य योग। कर्मयोग, भक्तियोग तथा ज्ञानयोग तीनों साधन योग के अन्तर्गत आते हैं तथा समत्वयोग साध्य-योग के अन्तर्गत अर्थात् कर्म, भक्ति और ज्ञान सभी का प्राप्तव्य समत्व ही है। ज्ञान चाहे कितना भी विशाल एवं प्रमाणिक क्यों न हो वह समत्व के अभाव में यथार्थ ज्ञान नहीं होता, क्योंकि समत्व-दर्शन यथार्थ ज्ञान का अनिवार्य अंग है। गीता में समदर्शी को ही सच्चाज्ञानी माना गया है। ज्ञान का अन्तिम लक्ष्य समत्व दर्शन ही है। गीता में श्रीकृष्ण ने कहा है कि जो समत्वभाव में स्थित होता है, वह मेरी परमभक्ति को प्राप्त करता है। और समत्वभाव होने पर ही व्यक्ति का कर्म अकर्म बनता है। समत्वभाव से किया गया कोई भी कर्म बन्धनकारी नहीं होता है।इस प्रकार समत्वभाव के कारण ही ज्ञान यथार्थज्ञान बन जाता है, भक्ति परमभक्ति बन जाती है और कर्म अकर्म बन जाता है तथा व्यक्ति परमात्मा को प्राप्त कर लेता है।

उपरोक्त विवेचन से द्योतित होता है कि गीता में योग का वास्तविक और स्वरूपभूत लक्षण वर्णित है, जिसमें प्रत्येक स्थिति में आत्मसंयम, कामनात्याग, प्राणिमात्र से प्रेम, अहंकारशून्यता, निर्भयता, शीतोष्णता, निन्दास्तुति एवं सुख-दुःख में समताभाव आदि गुणों की अपेक्षा की गयी है। समत्व की प्राप्ति ही गीता का परमलक्ष्य हैं क्योंकि समत्वभाव के कारण ही ज्ञान यथार्थज्ञान, भक्ति परमभक्ति तथा कर्म अकर्म बन जाता है। अतः स्पष्टतः कहा जा सकता है कि श्रीमद्भगवद्गीता का केन्द्रीय मूल्य समता है।

निष्कर्ष - अत: ऐसा कहा जा सकता है की भारतीय संस्कृति में वेद से लेकर आधुनिक ग्रंथो तक योग का निरूपण किया गया है। जो हमारी संस्कृति और साहित्य के बीच का अनुबंध प्रमाणित करता है।

संदर्भ सूची

1. संस्कृत – हिंदी शब्दकोश, पृ – 491
2. संस्कृत – हिंदी शब्दकोश, पृ – 899 – 900
3. ऋग्वेद 1 / 81 /7
4. वैदिक योगसूत्र - हरिशंकर जोशी, पृष्ठ, 4
5. ऋग्वेद 1/30/7

RESEARCH REVIEW
ISSN: 2321-4708
The Academic Research Issue
Open Access, Peer-Reviewed & Refereed Journal
An International Multidisciplinary Journal
Vol.1, Issue: 153, May 2025
Paper ID: RRJ598368
www.researchreviewonline.com
Publishing URL: https://www.researchreviewonline.com/issues/volume-1-issue-153-may-2025

6. यजुर्वेद 5/14
7. यजुर्वेद 11/2
8. यजुर्वेद 12/67
9. श्वेता उप॰ 2/11-1
10. कठोपनिषद 1/2/12
11. अमृत उप॰ 6
12. योगमनोविज्ञान, मोतीलाल बनारस दास, दिल्ली, 2014, पृ. 2
13. श्वेताश्वतरोपनिषद 2/8-1
14. श्वेताश्वतरोपनिषद् 1/14
15. श्वेताश्वतरोपनिषद् 1/14
16. त्रिह्मिणोपनिषद्, 25-27
17. योगतत्त्वोपनिषद् – 19
18. अमृतानादोषनिषद, 6
19. गीता (शांकर भाष्य), 2/11
20. गीता रहस्य, पृ॰ 60
21. गीता (रामानुजाचार्य) 1/1
22. भगवद्गीता (राधाकृष्णन), पृ॰ 82
23. भगवद्गीता, 2/50
24. भगवद्गीता 2/48
25. भगवद्गीता 5/18